International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 25-09-2020; Accepted: 10-10-2020; Published: 26-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 148-152

बेनीपुरी जी के संस्मरणों का कथ्यगत विश्लेशण

रीना यादव
शिवाजी नगर, काली स्थान रोड, पोस्ट– लालबाग, थाना– नगर, दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश
रामवृक्ष बेनीपुरी जी का कथा–क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। इस व्यापक क्षेत्र में गाँव की कच्ची–पक्की, पगडंडियाँ भी है तो शहरों की भव्य अट्टालिकाएँ भी हैं। मूलरूप से ग्रामगंधी वस्तुओं ने उन्हें अधिक लोप्रियता प्रदान की है। उनका अपना जीवन इतने कठोर झंझावातों, संघर्षों, आत्मबलिदानों एवं आंदोलनों से जूझा है कि उनकी लेखनी जब ज्वालामुखीय लावा उगलती है तब पाठक समुदाय का हृदय भी अंगारों की दग्धता से आतप्त हो उठता है, वहीं दूसरी ओर अपने संस्मर्ण्यों के श्रीचरणों में श्रद्धा–सुमन अर्पित करते समय वे इतने भावुक हो उठते हैं कि पाठकों में करूणा का उद्रेक उमड़ पड़ता है। अतः उनकी लेखनी के हर मोड़ में पाठकों को उद्वेलित करने की अमोध शक्ति है। सूक्ष्म से विराट तक का उनका कथ्य सफर एक सफल यात्रा है जिससे गाँव–घर की झोपड़ियों का हास्य–रूदन है, विदेशी गलियारों की भव्य शानों–शौकत है, अपने आराध्य संस्मर्ण्यों के जीवन के हँसते–गाते रूहानी पल है, जेल–जीवन की नारकीय यातनाएँ है, राजनीति के तिक्त–मधुर अनुभव है, पत्रकारिता के गौरवमयी क्षण है, स्वयं उनकी अपनी जीवनगाथा भी है। इतने व्यापक क्षेत्र पर ऐसी मजबूत पकड़ रामवृक्ष बेनीपुरी जी जैसे किसी कालजयी रचनाकार की ही हो सकती है।

मूल शब्दः बेनीपुरी, रामवृक्ष, रचनाकार, जीवनगाथा

प्रस्तावना

संस्मरण स्मृत्याधारित, सर्जनात्मक, यथार्थ परक विधा है। इसका कथानक कहानी, नाटक, उपन्यास की भाँति कल्पित–अकल्पित पूर्ण प्रसंगों एवं घटनाओं के तारतम्य पर आधारित नही रहता, अपितु इसके कथानक में कुछ विशेष रूप का फुटकलपन अथवा बिखराव दृष्टिगोचर होता है। इस बिखराव का कारण ये है कि ये सत्य घटनाओं अथवा प्रामाणिक प्रसंगों की नींव पर सृजित होती है। इसमें बड़ी–बड़ी ज्ञान, विज्ञान, तकनीकि, प्रौद्योगिकी, नसीहतें, उपदेशों का समाकलन नहीं रहता वरन् उसके स्थान पर निजता, भावुकता, साहचर्य का साम्राज्य स्थापित रहता है जिसे पढ़कर पाठकों के हृदय के तार सहसा झनझना उठे तथा मूक वाणी से ये उद्गार व्यक्त हो जाये, 'हाँ मुझे भी ऐसा ही महसूस हुआ था'। यह अपनत्व तथा सहानुभूतिजन्य लगाव ही संस्मरण के मूल तत्व है। इसलिए डॉ0 कामेश्वर शरण सहाय जी ने संस्मरण के कथानक के बारे में स्पष्ट किया है–

''संस्मरण की वस्तु चुनते समय लेखक वैसे ही प्रसंगों, संपर्कों, भौगोलिक वृत्तों, दशाओं–दृश्यों, स्थितियों या घटना–व्यापारों का चयन करता है, जो न केवल उसकी स्मृति को मथे, बल्कि प्रस्तुत होकर दूसरे की स्मृति को भी उद्‌बुद्ध करें।''[1]

रामवृक्ष बेनीपुरी जी हिन्दी साहित्य के मूर्द्धन्य संस्मरणकार है। उन्होंने हिन्दी साहित्य–जगत को संस्मरणों की ऐसी भरपूर व अमूल्य निधि भेंट की कि उनका नाम हिन्दी साहित्य के पाँच अग्रणी संस्मरणकारों में पांक्तेय है। उनकी मुख्य संस्मरण–पुस्तकें 'लाल तारा', 'माटी की मूरतें', 'गेहूँ बनाम गुलाब', 'मुझे याद है', 'जंजीरें और दीवारें', 'कुछ मैं कुछ वे', 'मील का पत्थर' है। इसके अतिरिक्त कुछ यात्रात्मक संस्मरण–पुस्तकें यथा–'पैरों में पंख बाँधकर', 'उड़ते चलो, उड़ते चलो', 'नेपाल में' भी उनकी संस्मरण–पुस्तकों की कड़ियों में श्री वृद्धि करती है। उनके संस्मरण का कथानक अत्यंत व्यापक है। इसमें ग्राम्य जीवन की कच्ची पगडंडिया है तो फ्राँस, इंग्लैंड, स्विटज़रलैंड, नेपाल, इटली के रंगीन चकाचौंध भरे गलियारे भी हैं। इसमें मानव क्षुधा–तृप्तक 'गेहूँ' का स्वरूप है तो उसकी संस्कृतिक वृत्तियों को तृप्त करते 'गुलाब' का भी कथ्य मुखरित हुआ है। इसमें जेल की अलंघ्य, काली दीवारों के पीछे दम तोड़ती मानवीयता के दस्तावेज़ है तो नवीन आज़ादी का अभिषेक करती तिरंगे की अंगड़ाई भी है। इसमें पराधीनता के क्रांतिकारी दिनों की दग्ध ज्वालाओं की धधक भी है तो आजादी का शीतल, नूतन, स्वर्णिम विहान भी है। व्यक्तिगत जीवन की कोमल संवेदनाएँ व अंतरंगताएँ है तो महान विभूतियों के जीवन के आलोकित प्रेरक–प्रसंग भी हैं। सामाजिक विद्रोह भी है, राजनीतिक हलचल भी है। पत्रकारिता के प्रत्यक्ष साक्ष्य भी हैं, यात्रा के सुखद अनुभव भी हैं। कहने का आशय है कि बेनीपुरी जी के संस्मरणों का कथानक सूक्ष्म से लेकर विराट तक की महान यात्रा का समुच्चय है। पारस के समान इनके स्पर्श ने हर क्षेत्र को न केवल छुआ, अपितु उसे स्वर्णिम कर दिया। आचार्य श्री जानकीबल्लभ शास्त्री जी ने उनके इन बहुमुखी भूमिकाओं तथा विस्तृत कथा क्षेत्र का अन्वेषण देखते हुए ही शायद ये उक्ति कही थी–

''वह क्या कोरे साहित्यकार थे? कर्मभूमि उनकी भावना का आकाश थी। निरे पत्रकार थे?.......ढेर सारे साहित्यकारों के निर्माता भर थे? पिचहत्तर पुस्तकें हरी–भरी साहित्य साधना की ओर सजग संकेत करती है। एक सर्व समादृत राजनीतिक नेता थे? कितने नेताओं को अपनी भाषा का इतना मोह होता है? अपने साहित्य की ऐसी मर्मज्ञता होती है? तो क्या एक उद्‌भट कर्मठ मनुष्य ही थे वह? जी चाहता है, कहूँ जैसे प्रतिभाशाली वैसे ही महान् इंसान–एक कर्मठ प्रतिभाशाली महान इंसान।''[2]

'लाल तारा' बेनीपुरी जी की आरंभिक संस्मरण पुस्तक है। इसमें बेनीपुरी जी का युवा हृदय समाज के दकियानुसी विचारधाराओं से आक्रान्त है। उनका यही हृदयगत हाहाकार इस संस्मरण पुस्तक में कथावस्तु के रूप में धधक रहा है। सर्वत्र लूट–खसोट का बोलबाला, कमाने वाले मेहनती कम, बैठे–बिठाये हक मारने वाले हकदार अधिक, अनीति–दुराचारी का फलना–फूलना, गरीब, दलित, निम्नवर्ग का अभावों के दलदल में धँसते जाना, सामाजिक स्तरीकरण जैसी ज्वलंत समस्याएँ बेनीपुरी जी ने विविध शीर्षकों में प्रस्तुत किया है। एक किसान दिन–रात मेहनत करता है, माघ की सर्दी, जेठ की दुपहरी, सावन–भादो की मूसलावृष्टि को झेलकर जब एक फसल तैयार खड़ी करता है तब महाजन उसमें अपनी, बड़ी हिस्सेदारी लेने कैसे आ धमकते हैं, ये उन्होंने अपनी 'लाल तारा' में 'गरभू' के आक्रोश के माध्यम से व्यक्त किया है–

''बकाया! बकाया! बकाया–साल–साल देते जाओ, देते जाओ, तो भी बकाया!......कर्ज़–फिर सूद–और दरसूद..........
इस अंबार की एक–एक बाली का हिसाब लगा हुआ है; इस रास के एक–एक कण का जमा–खर्च बँधा हुआ है।.........
जब फल खाने का वक्त हुआ, ये गिद्ध !
ये गिद्ध?–हाँ ये गिद्ध नही तो क्या हैं? ये गिद्ध हैं–मांसखोर हैं। गिद्ध तो मुर्दा मांस खाता है। ये गिद्ध के भी चचा हैं, जिंदा मांस खाते हैं।''[3]

महाजनी सभ्यता का ऐसा ही विरोधी स्वर उनकी 'हलवाहा', 'हँसिया और हथौड़ा', 'कुदाल' में आंदोलित हुआ है। 'यह और वह', 'कलाकार' तथा 'रेलगाड़ी' में उन्होंने सामाजिक स्तरीकरण पर कुठाराघात किया है जहाँ समाज को विभिन्न तबकों में बाँटकर एक वर्ग सर्व सुख–साधन का उपभोग कर रहा है एवं एक वर्ग जी–तोड़ मेहनत के बावजूद भी अधपेटा, अधनंगा उसकी दया की अपेक्षा में उसका मुँह ताकता रहता है। अपनी रचना 'कलाकार' में बेनीपुरी जी ऐसे दो बच्चों से हमारा साक्षात्कार करवाते हैं जो अपने अभाव में भी सांस्कृतिक एवं सर्जनात्मक दिव्य चेतनाओं से अभिभूत है, एक जेल में जेब काटते हुए पकड़ा गया बच्चा है जो मात्र, सूर्खी, चूने, दूब से जमीन पर सुन्दर चित्रकारी करता है तो एक जंगलों में लकड़ी ढोता हुआ गायक जिसके गायन को सुनकर ऐसा प्रतीत होता कि संगीत समक्ष प्रस्तुत हो गया हो। ऐसे दिव्य कलाकारों की दीनता तथा इनके विपरीत कुछ अमीर–कुमारों की कला को अर्जित करने की आडंबरता बेनीपुरी जी को मर्माहत कर देती हैं– 'लाल तारा' में बेनीपुरी जी के कुछ क्रांतिकारी संस्मरण 'शहीदों की चिताओं पर' तथा 'इन्कलाब जिन्दाबाद' भी है, जिसमें उनकी विप्लवी विचारधाराएँ प्रस्तुत हुई है। 'इन्कलाब जिन्दाबाद' भगत सिंह की शहादत पर उन्होंने लिखी थी तथा इस रचना के कारण उन्हें डेढ़ साल की जेल की सजा भी भुगतनी पड़ी थी, परंतु ये नारकीय यातनाएँ उन्हें सत्य को उद्घाटित करने से रोक नहीं पाई। ''एक जेल की हवा खा रहा था–दूसरा लकड़ियाँ तोड़ रहा था। हमारे रवि वर्मा, हमारे तानसेन जेलों में सड़ते हैं। ईंधन के गट्ठर ढ़ोते हैं। और उसी समय अपने दो मित्र तनयों की याद आती है, एक 75 रूपये महीने खर्च कर शांति–निकेतन में फ़कत लकीरें खींचा करते हैं, दूसरे 50 रूपये मासिक एक संगीतज्ञ पर खर्च कर जब–तब भोर की मेरी अनमोल नींद हराम करते हैं।''[4]

'मुझे याद है', 'जंजीरें और दीवारें', कुछ मैं कुछ वे' बेनीपुरी जी की आत्मकथात्मक संस्मरण पुस्तकें है। इसमें बेनीपुरी जी ने अपने व्यक्तिगत जीवन के विविध पहलुओं को एक स्रग्रह–चित्र के रूप में समेकित किया है। एक–एक पन्ने उलटते जाइए, उनके जीवन के विविध दृश्यों को, घटनाओं को, संघर्षों को, सफलताओं को पाते जाइए। वैसे भी डॉ0 कामेश्वर शरण सहाय जी ने कहा है–

''संस्मरण की वस्तु चाहे जितनी भी क्षीणकथाओं को लेकर चलें, लेखक के रचनात्मक राग के साथ–साथ उसके व्यक्तिगत जीवन से भी सम्बद्ध होती है।''[5]

'मुझे याद है' में बेनीपुरी जी ने अपने वास्तविक जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण व्यक्तियों यथा– अपनी माता, पिता, मामा, पत्नी, मित्र–जयप्रकाश के अद्भुत संस्मरण प्रस्तुत किये हैं अपितु कुछ पत्रकारिता, कुछ राजनीति, कुछ समाजनीति, किसान आंदोलन, भूकंप के प्रलयंकारी अनुभव भी साझा किये है। इस कृति में उनके संघर्षशील, बेचैन जीवन की निष्कपट व सतत् कर्मरत वीरगाथा मुखरित हुई है। ओंकार शरद जी उन की इस रचना के बारे में कहते हैं– ''जिसमें ('मुझे याद है' में) उन्होंने बिना लाग–लपेट के अपने जीवन–संघर्ष के सभी रूप प्रस्तुत किये हैं, कच्ची–पक्की बातें कही हैं, युग की सच्ची कथा कही हैं और सबसे बढ़ कर विपरीत तूफानी झोंकों में थपेड़े खाते अपने ही जीवन और निर्माण की प्रक्रिया की परत पर परत बड़ी निर्ममता से उघाड़ते चले गये हैं। अपने ही सम्बन्ध में ईमानदारी बरतना सबसे बड़ी चारित्रिक ऊँचाई है और इस दिशा में बेनीपुरी जी बड़े खरे उतरे हैं, अपनी–मुझे याद है–कृति के पृष्ठों के माध्यम से।''[6]

'जंजीरें और दीवारें' में बेनीपुरी जी ने अपने जेल–जीवन के अनुभवों को सिलसिलेवार ढंग से प्रस्तुत किया है। अपने जीवन के आठ वर्ष, नौ महीनें और सोलह दिन इस युगधर्मा ने जेल के पाश्विक वातावरण में न केवल बिताए है बल्कि उन्हीं काली, कठोर, गुमसुम, अलंघ्य, कुरूप दीवारों के कुदृष्टियों, कुवृत्तियों, कुवाक्यों के बीच रहकर 'अंबपाली' माटी की 'मूरतें', पतितों के देश में, 'गाँधी नामा' जैसी अनुपम रचनाएँ सृजित की है। जेल की धधकती भट्टी में जहाँ जिंदगी दम तोड़ देती है, साहित्य का कुसुम खिलाना ऐसे ही किसी साधक से अपेक्षित है। जेल–जीवन भी किसी संस्मरण की कथावस्तु हो सकती है, ऐसी सोच रखने वाले शिष्ट–मंडल को बेनीपुरी जी ने निर्मम वास्तविकताओं एवं पाषाणी तथ्यों के साथ ये पुस्तक सप्रेम भेंट की है। उन्होंने इसके विविध कालुष्य को यथा–अपच्य भोजन, गंदगी भरे पाखाने–पेशाब की व्यवस्था, तिकठी–बेंत, कोल्हू के बैल जैसी निष्ठुर सज़ा, अलग–अलग जेल अधिकारियों का अमानुषिक दंड–विधान, जूतों की ठकठक, दिन–रात कैदियों की गिनती, पगली घंटी, सजायाफ्ता संगीन मुजरिमों से दिन–रात सामना, भिन्न–भिन्न प्रकार के जेलों का इतना सजीव विविधतापूर्ण वर्णन प्रस्तुत किया है कि वे उन दिनों के जेल–जीवन को प्रस्तुत करते ऐतिहासिक दस्तावेजों की श्रृंखला में मूल्यवान कड़ी के रूप में रखे जा सकते है। जेल से 'जयप्रकाश नारायण' जी का अपने पाँच साथियों के साथ भागने की घटना को उन्होंने इसी पुस्तक में 'महापलायन' शीर्षक में तीन भागों में प्रस्तुत किया है। उन्होंनें जयप्रकाश नारायण जी की जेल से भागने की तुलना महात्मा बुद्ध के गृह त्याग की घटना 'महाभिनिष्क्रमण' से करते हुए उसे 'महापलायन' का नाम दिया है। इसके पीछे उनका तर्क इन शब्दों में व्यक्त होता है–

''दोनों में एक महान आदर्श काम कर रहा था। दोनों में एक संदिग्ध भविष्य पर अपने को अर्पित किया जा रहा था। दोनों में संसार के सारे माया–मोह को पीछे छोड़ा जा रहा था। दोनों के मूल में यह निश्चय था– करो या मरो। वैसा ही घोर अंधकार–किन्तु सिद्धार्थ कुमार घोड़े पर जा रहे थे, ये छः जो रात को चले, उनके पैरों में जूते तक नहीं थे।''[7]

'कुछ मैं कुछ वे' संस्मरण पुस्तक के दो खंड हैं– (क) राजनीति के तूफान में (ख) पत्रकार जीवन के पैंतीस वर्ष।

इन दोनों खण्डों में बेनीपुरी जी ने अपने जीवन के दोनों आयामों राजनीति एवं पत्रकारिता को अपने तृतीय तथा सबसे महत्वपूर्ण आयाम साहित्यिकता से सुसज्जित किया। प्रथम खण्ड में उनके राजनीतिक जीवन के तिक्त–मधुर अनुभव समाहित है तथा द्वितीय खण्ड में उनके पत्रकारिता जीवन के गौरवमयी क्षण। उन्होंने 'चुन्नु–मून्नु, बालक, युवक, कर्मवीर, योगी, तूफान, सर्चलाइट, हिमालय, जनता, नई धारा जैसी युग–विधायक पत्रिकाओं का संपादन किया। उनकी ये पत्रिकाएँ न केवल सामाजिक, राजनीतिक हलचलों की खबर जुटाने वाली सामग्री थी बल्कि कई दलित, कमजोर वर्ग को सशक्त करनेवाली, उन्हें राह सुझाने वाली सारथी भी बन गई थी, जैसा कि बेनीपुरी ने काश्तकारी बिल पेश होते समय 'जनता' की भूमिका में प्रकाश डाला है– ''उसी समय बिहार असेम्बली में काश्तकारी बिल पेश था। उसमें किसानों के हित सम्बन्धी धाराएँ रखवाने के लिए 'जनता' ने घनघोर आन्दोलन शुरू किया। किसानों के झोपड़ों तक में 'जनता' की पैठ हो गई। 'जनता' बिहार के दुर्बल किसानों की कमर सीधी करके खड़ा होने में मदद देनेवाली उसकी प्यारी लाठी बन गई।''[8]

ऐसी–ऐसी अनगिनत क्रांतियों को बेनीपुरी जी की पत्रिकाओं ने दिशा प्रदान की, 'दिनकर', 'आरसी', 'केसरी' कुंअर सिंह, द्विज जी जैसे अमर साहित्यकारों की वाणी बेनीपुरी जी की पत्रिका 'युवक' में ही प्रस्फुटित हुई थी। इसीसे बेनीपुरी जी अपने पत्रकारिता के इस रोमांचकारी सफर में अपने आपको अत्यंत धन्य मानते हुए कहते हैं–

''पैंतीस वर्षों का यह मेरा पत्रकार जीवन! कितना संघर्षपूर्ण, कितना उलझन भरा, कितना आनंदप्रद, कितना गौरवमय ! हाँ मैं अपने पत्रकार जीवन को भी अपने लिए गौरवमय समझता हूँ। मैं मानता हूँ, मैं गौरव के उस शिखर तक नहीं पहुँच सका, जहाँ पहुँचने के लिए मैं सदा प्रयत्नशील रहा, आज भी छटपटाता हूँ, किन्तु मुझ अशिक्षित से अंकिंचन से जो कुछ भी बन पड़ा उस पर मझे गर्व अवश्य है।''[9]

'माटी की मूरतें' बेनीपुरी जी के साहित्यिक जीवन की अक्षय निधि है अथवा यह कहा जाये कि उनकी साहित्यिक पर्वतश्रृंखला की 'एवरेस्ट' है। इसमें उपस्थित बारह के बारह संस्मरण तत्कालीन भारतीय जीवन की महागाथा है। हर एक का कथानक इतना साधारण होते हुए भी इतना प्रभावशाली है कि हिन्दी संसार ने इन्हें सिर–आँखों पर लिया। जिंदगी से सराबोर इन जीवंत संस्मरणों के बारे में बेनीपुरी जी का मंतव्य है–

'ये जिंदगी के नजदीक ही नहीं हैं, जिंदगी में समाई हुई है। इसलिए जिंदगी के हर पुजारी का सिर इनके नजदीक आप–ही–आप झुका है। बौद्ध और ग्रीक–रोमन मूर्तियाँ दर्शनीय हैं, वंदनीय है, तो माटी के ये मूरतें भी उपेक्षणीय नहीं, आपसे हमारा निवेदन सिर्फ इतना है।[10]

इस संस्मरण–माला के बारहों मोती साधारण होते हुए भी दिव्य आभा से दीप्त होते असाधारण रश्मियों का विकिरण करती है। साधारण सी चूड़िहारिन 'रजिया' अपने जिंदादिली, शोखी, सुकौमार्य से लोगों का मन जीतती है तो गाँव की अल्हड़ षोड़सी 'बुधिया' गाँव के गोपालों को कभी तड़पाती–तरसाती नजर आती है तो कभी मातृत्व के रूप में वंदनीय एवं अर्चनीय। गाँव के प्रत्येक व्यक्ति की मदद को तैयार 'सरजू भैया' का सुधुआपन भी व्यक्त होता है तो लोगों की कृतघ्नता भी। बेनीपुरी जी के बचपन के मित्र 'देव' का शोहदापन, आवारापन भी हैं तो देश–सेवा में समर्पित, बिना उफ किए पुलिस से मारखाती उसकी उज्ज्वल, ज्वलंत, दिव्य, ऊर्जस्वित आत्मा भी। 'बलदेव सिंह' जैसे वीर युगपुरुष का दूसरों के प्रति त्याग भी दर्शनीय है तो कुछ कायरों द्वारा रात के अँधेरे में उन्हें धोखे से मार देने का कुकृत्य भी है। तंत्र–मंत्रों, डायन–जोगन की बलि चढती 'रूपा की आजी' का सजीव वृतांत भी है तो मरूस्थल जैसे रूखे जीवन में हरीतिमा का संचरण करने वाली 'भौजी' का भी चित्रण है। छोटी जाति के होते हुए भी उच्च आदर्शों का निर्वाह करते 'बालगोबिन भगत' है तो हिन्दु–मुस्लिम दंगों को अपने चट्टानी ताकत से रोकने वाले 'सुभान खाँ' भी इस संस्मरण पुस्तक में समादृत है। गाँव की होली, दीवाली, दशहरा को अपनी डफ, झाल, ढ़ोलक से रंगीन बनाता हुआ अकिंचन, आवारा, मस्तमौला 'परमेसर' भी है तो कड़ी मेहनत से जीवन निर्वाह करता स्वाभिमानी 'मंगर' भी है। बूढ़े सरकारी सेवकों की पेंशन योजना का हवाला देकर अपने लिए भी पेंशन माँगता बूढ़ा कैदी 'बैजू मामा' साधारण होते हुए अपनी इन दलीलों में कितना असाधारण है– ''हुजूर, सुनते है, सरकार पच्चीस साल काम करने पर अपने नौकरों को पिनसिन देती है। ....दुहाई सरकार, धरम साछी है, काम करने में कभी कोताही नहीं की।....अब तीस साल की इस गाढ़ी मेहनत के बाद हुजूर, क्या इस बूढ़े को भी पिनसिन का हक नहीं है? दुहाई हुजूर की, दुहाई माँ–बाप की, आप इनसाफ कीजिए।''[11]

यही प्रश्न जीवन पर्यन्त खेतों में मजदूरी करनेवाले 'मंगर' के बुढ़ापे में भी सामने आया तथा बेनीपुरी जी की दूसरी संस्मरण पुस्तक में उद्धृत शीर्षक 'गोशाला' में अक्कल के माध्यम से भी ऐसे ही उद्गार व्यक्त हुए हैं। यथा– ''बाबू, जिंदगी–भर उनकी सेवा की। इस बुढ़ापे में खाना–पीना, कपड़ा–लत्ता, घर–दुआर देने से रहे, क्या घूर की आग से भी मुझे महरूम किया जाना चाहिए?''[12]

'गेहूँ और गुलाब' बेनीपुरी जी की अगली संस्मरण पुस्तक है। इसका कथानक क्षीण धरातल लेकर चलता है परंतु मानसिक सद्वृत्तियों एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को सही दृष्टिकोण प्रदान करने में ये संस्मरण अत्यंत उपयोगी है। हाल ही में मिली आजादी वाले देश के लिए सांस्कृतिक पुनरूत्थान की चेतना कितनी आवश्यक है ये बेनीपुरी जी ने अपने क्षुधा–तृप्तक गेहूँ के साथ सौन्दर्य तृप्तक गुलाब की अनिवार्यता को दर्शाते हुए स्पष्ट किया है। गेहूँ और गुलाब उस दौर का एक प्रचलित नारा बन गया था। इस संस्मरण पुस्तक में भी बेनीपुरी जी ने साधारण पनिहारिन, घासवाली, चरवाहा, डोम–कंजरो की संक्षिप्त मानव सुलभ उद्रेकों को स्पष्ट किया है तो गेंदा, हरसिंगार, गुलाब, नींव की ईंट का मानवीकरण कर अद्भुत दृश्य उपस्थित किया है। 'ये मनोरम दृश्य' में उन्होंने 'चपला की चमक', 'बादलों से ऊपर', 'अष्टमी का चन्द्रमा', 'शरद की पूर्णिमा', अमा–निशीथ', 'सरसों के समुद्र में' जैसे शीर्षकों में प्राकृतिक दृश्यावलियों की मनोरम फुहारें बरसायी हैं। 'मीरा नाची रे' में उन्होंने नारी जगत को अपने संगीत, नृत्य, वादन से समृद्ध करने हेतु प्रेरित किया है–

''सृष्टि–साधना का फूल है नारी; मानव–साधना का फूल है संस्कृति।

फूल से फूल की शोभा है।

अपने गाँवों में, नगरों में हमें संस्कृति का जो समावेश करना है; क्या वह बिना नारी के सहयोग के संभव है?''[13]

'मील के पत्थर' में बेनीपुरी जी ने अपने कुछ श्रद्धेय मित्रों एवं महापुरुषों को श्रद्धाप्रसून अर्पित करने की पावन चेष्टा की है। जिस प्रकार गंगा के पावन जल में खड़ा होकर, गंगा की शुभ्र, धवल जलराशि को अपनी अंजुलि में समेटकर हम हिन्दु गंगा को ही समर्पित करते हुए अपने आप को कृत–कृत्य मानते हैं, उसी प्रकार 'मील के पत्थर' में बेनीपुरी जी ने अपने जीवन को प्रभावित करने वाले कुछ आराध्यों को, उन्हीं के जीवनांशों के प्रेरणादायी प्रसंगों द्वारा सप्रेम श्रद्धांजलि अर्पित की है। उनके इन श्रद्धा सुमनों में अमरत्व है, ये बाजार में मिलने वाले फूलों के बासीपन, सड़ांध से मुक्त है, ये संस्मरण ताजगी से भरे है तथा हमेशा प्रासंगिक बने रहने वाले है। वास्तव में ये गंतव्य को दिशा दर्शाते मील के पत्थर हैं। इन निर्जीव पत्थरों में सजीव आत्माएँ साँसें लेती है। प्रेमचंद, गाँधी, राजेन्द्र प्रसाद, शिवपूजन सहाय आदि के अतिरिक्त लियोनार्दो–द–विंची, मारकेल ऐंजेलों, राफेल, तिशियन आदि के जीवन के विविध प्रसंग इस संस्मरण–पुस्तक को प्रेरणादायी दिशा प्रदान करते हैं। उनके इन्हीं साहित्य–सेवाओं को उजागर करते हुए राजदेव सिन्हा कहते है– ''बेनीपुरी समाज के सच्चे शिक्षक हैं। वे साहित्य–सृजन करते हैं। समाज को शिक्षित करने, उसका चरित्र–निर्माण करने, उसे जिन्दगी की चेतना से लैस करने के लिए, ऐसे सच्चे शिक्षक गिनती के होते हैं समाज में। राजा राममोहन राय हों, दयानंद सरस्वती हों, स्वामी विवेकानंद हों, मैथिलीशरण गुप्त हों, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला हों, बेनीपुरी हों, इन्होंने भले ही अलग–अलग क्षेत्रों में काम किया, लेकिन ये अपने काम से अपने जीवन–निर्माण से, चरित्र गठन से आदरणीय हैं, सदैव पूजनीय हैं और ये हमारे सबसे बेहतर शिक्षक है पथ–प्रदर्शक है।''[14]

'पैरों में पंख बाँधकर' में बेनीपुरी जी के यूरोप भ्रमण के यात्रात्मक संस्मरण है तो 'उड़ते चलो उड़ते चलो' में फ्राँस, इंग्लैण्ड, स्विटजरलैण्ड और इटली के विविध भ्रमणस्थलियों का नेत्ररंजक व मनोहरी वर्णन है। 'नेपाल में' में नेपाल के विविध राजनीतिक, सामाजिक गतिविधियों की हलचल भी है, वहाँ के विविध

दर्शनस्थलों का भी मनोरम चित्रण है। कथानक का वृत्त कुछ संकुचित है। छोटे–छोटे प्रसंग इन रिक्तताओं को भरते नजर आते है। विदेशी–भ्रमण के अंतर्गत बेनीपुरी जी का दृष्टिकोण तुलनात्मक रहा है। वे वहाँ की व्यवस्था को भारत की विविध दुर्व्यवस्थाओं के साथ आँकते दृष्टिगत होते है। जैसे शेक्सपीयर की जन्म–स्थली के संरक्षण एवं सुरक्षा को देख उनकी साहित्यकार आत्मा अपने देश के साहित्य– महारथियों के दुर्दशा व दीनता पर कराह उठती है–

''शेक्सपीयर की इस जन्मभूमि की साजसज्जा को देखकर बार–बार राजापुर और बिस्फी की याद आ रही है। क्या हम राजापुर में तुलसीदास की और बिस्फी में विद्यापति की स्मृति में कुछ ऐसे ही आयोजन नहीं कर सकते।''[15]

इस प्रकार बेनीपुरी जी के संस्मरण की कथावस्तु में सामाजिक चेतना है, सांस्कृतिक आवाहन हैं, यथार्थ की गूँज भी है। सामाजिक विसंगतियों से त्रस्त उनकी आत्मा बाल्यावस्था से ही घिसी–पिटी सामाजिक परिपाटी की विरोधी रही है। बचपन में उनकी माता की मृत्यु के समय उनकी माँ के पैरों में पुरानी मान्यता के अनुसार कुछ सामाजिक ठेकेदारों द्वारा कील ठोंक दी गई थी जिससे वह वापस बच्चे के पास न आ सके। इन शब्दों में उनका सामाजिक बहिष्कार स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है– ''जब–जब मुझे यह याद आता है कि मेरी मरी हुई माँ के पैरों को इकट्ठा कर एक लम्बी कील ठोंक दी गई थी, अपने समाज पर वह गुस्सा आता है, जिसकी कोई सीमा नहीं! जहाँ माँ का, मातृत्व का, संतान–प्रेम का ऐसा अपमान हो, निरादर हो, उस समाज को जहन्नुम जाना चाहिये।''[16]

इसी तरह वे समाज की रूढ़िगत मान्यताओं को कठघरे में खड़ा करते हैं। समाज में व्याप्त विविध स्तरीकरण से वे क्षुब्ध हैं। अपनी रचना 'रेलगाड़ी' के तीनों डिब्बों के माध्यम से उन्होंने समाज के विविध वर्ग धनी वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग का ढ़ाँचा प्रस्तुत किया है। वर्ण–भेद, जातिगत समस्या को उन्होंने 'बालगोबिन भगत' की आरंभिक पंक्तियों में ही धिक्कारा है– ''तेली, जिसका मुँह देखने के बाद यात्रा सफल नहीं होती, ऐसी व्यवस्था दे रखी थी हमारे समाज ने, 'तेलिया–मसान', यह घृणास्पद आस्पद जुड़ा था जिस जाति के साथ। और, तब तक मुझमें वह ज्ञान भी नहीं था कि समझूँ कि ये सारी बातें हमारे सड़े समाज की घृणिततम मनोवृत्ति की सूचक है। हाँ, बालगोबिन भगत तेली थे।''[17]

पत्रकारिता के जगत में अर्थ–पिशाचनी का हस्तक्षेप भी बेनीपुरी जी के लिए असहनीय था। जिस पत्रकारिता को कभी महावीर प्रसाद द्विवेदी की तपस्या एवं गणेश शंकर विद्यार्थी की तेजस्विता ने सींचा था उसका बाजारीकरण बेनीपुरी जी को अत्यंत आहत कर रहा था।

''परिमाण बढ़ रहा है, गुण घट रहा है। सरस्वती को लक्ष्मी ने ऐसा दबोच रखा है कि बेचारी का दम घुट रहा है। द्विवेदी–विद्यार्थी युग समाप्त हुआ, डालमिया–बिड़ला युग सिर पर नाच रहा है।''[18]

बेनीपुरी जी के संस्मरणों में सांस्कृतिक पुनरूत्थान का अभिवादन मुक्त हस्त से हुआ है। इसे भौतिकता की अंधगुफा से उठाकर सांस्कृतिक धरातल पर प्रतिस्थापित किया गया है। 'गेहूँ' और 'गुलाब' के माध्यम से नई संस्कृति के उत्थान की चेतना को जागृत करने का महती प्रयास यहाँ द्रष्टव्य है–

''गेहूँ हम खाते हैं, गुलाब सूँघते हैं। एक से शरीर की पुष्टि होती है, दूसरे से हमारा मानस तृप्त होता है।...... किंतु; चाहे कच्चा चरे, या पकाकर खाए–गेहूँ तक पशु और मानव में क्या अन्तर? मानव को मानव बनाया गुलाब ने! मानव, मानव तब बना, जब उसने शरीर की आवश्यकताओं पर मानसिक वृत्तियों को तरजीह दी।''[19]

इस संस्कृति के लिए आवश्यक है मनुष्य का संघर्ष की अनिवार्यता को स्वीकार करना, शहादत को गले लगाना तभी सुन्दर सृष्टि व संस्कृति का सृजन संभव है। जैसा कि बेनीपुरी जी ने कहा है– ''सुन्दर सृष्टि! सुन्दर सृष्टि, हमेशा ही बलिदान खोजती हैं, बलिदान ईंट का हो या व्यक्ति का।

सुन्दर इमारत बने, इसलिए कुछ पक्की–पक्की लाल ईंटों को चुपचाप नींव में जाना है।

सुन्दर समाज बने, इसलिए कुछ तपे–तपाये लोगों को मौन–मूक शहादत का लाल सेहरा पहनना है।......

हाँ, शहादत और मौन मूक! समाज की आधारशिला यही होती हैं।''[20]

इस संघर्ष की कसौटी से होकर ही कोई भव्यता व श्रेष्ठता का आसन ग्रहण कर सकता है। गुलाब फूलों का राजा अपनी कोमलता, स्निग्धता, सौन्दर्य के लिए नहीं बना, बल्कि अनगिनत काँटों के ऊपर विराजमान होकर भी अपनी खिलखिलाहट, नेत्र रंजकता व सौम्यता को बनाए रखने के कारण बना है। अतः संघर्ष से संपृक्ति बेनीपुरी के संस्मरणगत कथ्य के अनिवार्य तत्त्व है।

बेनीपुरी के संस्मरणों के कथानक यथार्थ की धरती में पनपे हैं इन वस्तुओं का चयन उन्होंने अपने ईद–गिर्द के विषय–जगत से बटोरे हुए अनुभव–खंडो, उपखंडों को हल्की सी कल्पना रेखा से आबद्ध करते हुए नये रूपों में संगठित करने का प्रयास किया है। डॉ. देवराज जी का विचार है– ''किसी देश या जाति का स्थायी कल्याण वही साहित्य कर सकता है जिसके विधायक तत्व अनुभूत यथार्थ से चुने गये हैं। श्रेष्ठ साहित्य युग की शक्तियों, युग के नर–नारियों, युग की आशाकांक्षाओं, उसकी सुख–दुख तथा चरित्र संबंधी संभावनाओं से ठोस परिचय कराता है। ...... महाप्राण कलाकार देश या जाति को अपने जटिल युग से परिचित कराता हुआ उन्हें युग में विपुल एवं दृढ़भाव से जीवित रहने की प्रेरणा देता है''[21]

बेनीपुरीजी सच्चे अर्थों में यथार्थवादी संस्मरणकार है। अपने संस्मरणों की कथावस्तु में उन्होंने समाज के दबे–कुचले लोगों को वाणी प्रदान की है, उनका अवलंबन कर वे इन विसंगतियों के खिलाफ खड़े हुए हैं। सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व करते उनके ये संस्मरण उन दिनों के तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के प्रतिबिंब है। जीवन के हर पहलू को उन्होंने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से लेखनीबद्ध किया है। उनके संस्मरणों में व्याप्त सामाजिक दृष्टिकोण उन्हें प्रेमचंद के समकक्ष खड़ा कर देता है। शोधार्थी पुष्पा गुप्ता जी के शब्दों में– ''बेनीपुरी प्रेमचंद की अग्रिम कड़ी हैं। प्रेमचंद और बेनीपुरी के साहित्य को देखने से ऐसा लगता है कि प्रेमचंद के असामयिक निधन के बाद उनके अधूरी काम को बेनीपुरी ने पूरा किया है।''[22]

उन्हीं के समान बेनीपुरी जी ने कथानक को राजसी चौंखटों के बाहर तलाशा, ग्रामगंधी भाषा व निजता से उनका सिंचन कर उन्हें साहित्योपयोगी बनाया। उन्हें साधारण से असाधारण बनाया, इन संस्मरणों में न केवल अतीत की प्रेरणा हैं बल्कि वर्तमान की क्रांतिमय धधक भी है तथा भविष्य की ओर दृष्टि भी है। इसी कारण से ये उन दिनों भी प्रासंगिक थे, आज भी है व भविष्य में भी प्रतिमान बनी रहेंगी।

निष्कर्ष

उक्त आलेख का निष्कर्ष यह है कि बेनीपुरी जी एक सशक्त अग्निपथ पर बढ़ते निर्भीक संस्मरणकार है, जिनकी कलम को कायरता छू तक नहीं पाई है। उनके ग्रामीण संस्मरण अपनी जीवंतता के कारण पाठकों के हृदय में एकछत्र राज करते हैं तो क्रांतिकारी संस्मरणों में दिव्य प्रेरणा की ज्योति है। इस युगपारस ने जिस वस्तु को छुआ वह स्वर्णिम हो उठा है। अतः उनका वस्तु–क्षेत्र हिन्दी साहित्य की स्वर्णिम निधि मानी जा सकती है।

संदर्भ सूची

1. हिंदी संस्मरण शिल्प, हिंदी का संस्मरण साहित्य, लेखक–डॉ. कामेश्वर शरण सहाय, पृ.–343
2. नई धारा, बेनीपुरी स्मृति अंक, लेखक–आचार्य जानकी बल्लभ शास्त्री, पृ.–340
3. लाल तारा, बेनीपुरी ग्रंथावली–1, लेखक–रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ.–91
4. कलाकार, लाल तारा, बेनीपुरी ग्रंथावली–1, लेखक–रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ.–125
5. हिंदी का संस्मरण साहित्य, लेखक– डॉ. कामेश्वर शरण सहाय, पृ.–342
6. एक प्रेरक आत्म कहानी, मुझे याद है, लेखक–ओंकार शरद, पृ–VIII, IX
7. महापलायन (क), जंजीरें और दीवारें, बेनीपुरी ग्रंथावली–4, लेखक–रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ.–175
8. पत्रकार जीवन के पैंतीस वर्ष, कुछ मैं, कुछ वे, बेनीपुरी ग्रंथावली–4, लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ.–279
9. वही, पृ.–286
10. ये माटी की मूरतें, माटी की मूरतें, लेखक–रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ.–08
11. बैंजू मामा, माटी की मूरतें, लेखक–रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ.–108
12. गोशाला, गेहूँ और गुलाब, बेनीपुरी ग्रंथावली–1, लेखक–रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ.–227
13. मीरा नाची रे, गेहूँ और गुलाब, बेनीपुरी ग्रंथावली–1, लेखक–रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ.–222
14. जिन्दगी की खोज में बेनीपुरी, लेखक–राजदेव सिन्हा, समय सुरभि अनंत, त्रैमासिक पत्रिका, (अक्टूबर–दिसंबर 2017 अंक), पृ.–33
15. शेक्सपीयर के गाँव में, पैरों में पंख बाँधकर, बेनीपुरी ग्रंथावली–4, लेखक–रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ.–369
16. मेरी माँ, मुझे याद है, लेखक–रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ.–13
17. बालगोबिन भगत, माटी की मूरतें, लेखक–रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ.–72
18. पत्रकारिता जीवन के पैंतीस वर्ष, कुछ मैं, कुछ वे, बेनीपुरी ग्रंथावली–4, लेखक–रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ.–286
19. गेहूँ बनाम गुलाब, गेहूँ और गुलाब, बेनीपुरी ग्रंथावली–1, लेखक–रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ.–195
20. नींव की ईंट, गेहूँ और गुलाब, बेनीपुरी ग्रंथावली–1, लेखक–रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ.–203
21. कल्पना और वास्तविकता, भूमिका, साहित्य चिन्ता, लेखक–डॉ. देवराज, पृ.–05
22. शोध–ग्रंथ–रामवृक्ष बेनीपुरी के साहित्य में चित्रित समाज, बिहार विश्वविद्यालय की पी. एच. डी. के लिए प्रस्तुत शोध–प्रबंध, शोध–निर्देशिका– डॉ. सरोज प्रसाद, शोधकर्त्री : पुष्पा गुप्ता, वर्ष–1987 ई., पृ.–241